इकाई 6 साक्षात्कार की तैयारी

इकाई की रूपरेखा

6.0 उद्देश्य
6.1 प्रस्तावना
6.2 साक्षात्कार का महत्व
6.3 साक्षात्कार के प्रकार
  6.3.1 व्यक्ति-आधारित साक्षात्कार
  6.3.2 विषय-आधारित साक्षात्कार
6.4 साक्षात्कार की तैयारी
  6.4.1 व्यक्ति का निर्धारण
  6.4.2 पूर्वानुमति
  6.4.3 आवश्यक अध्ययन
6.5 प्रश्नावली का निर्माण
  6.5.1 प्रश्नों का लेखन
  6.5.2 मुख्य बातें
  6.5.3 आरंभिक प्रश्न
6.6 साक्षात्कार लेना
  6.6.1 सहज मनःस्थिति
  6.6.2 तादात्म्य
  6.6.3 आरंभिक चरण का महत्व
  6.6.4 अन्य जरूरी बातें
6.7 साक्षात्कार की रिकार्डिंग
  6.7.1 स्मरण-शक्ति
  6.7.2 नोट लेना
  6.7.3 टेप रिकार्डर का प्रयोग
6.8 सारांश
6.9 शब्दावली
6.10 बोध प्रश्नों/अभ्यासों के उत्तर

6.0 उद्देश्य

फीचर लेखन के व्यवहारमूलक पाठ्यक्रम की यह छठी इकाई है। इस इकाई में आप "साक्षात्कार की तैयारी" के बारे में पढ़ेंगे। इस इकाई को पढ़ने के बाद आप :

- फीचर लेखन के क्षेत्र में साक्षात्कार का क्या महत्व है, यह बता सकेंगे;
- साक्षात्कार के प्रकार बता सकेंगे;
- साक्षात्कार के लिए आवश्यक तैयारी के संबंध में क्या-क्या बातें जानना जरूरी है, इसको समझा सकेंगे;
- साक्षात्कार के लिए प्रश्नों का निर्माण कर सकेंगे;
- साक्षात्कार ले सकने की क्षमता का विकास कर सकेंगे; और
- साक्षात्कार के लिए आवश्यक सामग्री का सही उपयोग कर सकेंगे।

6.1 प्रस्तावना

फीचर लेखन के व्यवहारमूलक पाठ्यक्रम से संबंधित दूसरे खंड की यह छठी इकाई है। इकाई 6 और 7 में आपको साक्षात्कार के संबंध में बताया जाएगा। साक्षात्कार पत्रकारिता की एक प्रमुख विधा है। साक्षात्कार रेडियो एवं टी.वी. के लिए भी लिया जाता है।

साक्षात्कार लेना और देना दोनों ही महत्वपूर्ण कार्य है। न साक्षात्कार लेना आसान है और न ही देना। इनके लिए व्यवसायिक कुशलता और निरंतर अभ्यास की आवश्यकता होती है। इस इकाई का उद्देश्य आपको यह बताना है कि साक्षात्कार के लिए किस तरह की तैयारी आवश्यक है। साक्षात्कार केवल दो व्यक्तियों की निरुद्देश्य बातचीत नहीं है। साक्षात्कार के पीछे निश्चित उद्देश्य होता है। इस उद्देश्य के अनुसार ही प्रश्नों का निर्माण होता है। साक्षात्कार किससे लिया जाना है, कब लिया जाना है, किस पत्र-पत्रिका के लिए लिया जाना है, भेंटकर्त्ता कौन है, साक्षात्कार का विषय या क्षेत्र क्या है—ये सभी बातें महत्वपूर्ण होती हैं। जिनसे आप साक्षात्कार लेना चाहते हैं, वह महत्वपूर्ण व्यक्ति हो सकता है। हो सकता है उसके पास समयाभाव हो। ऐसी स्थिति में यह आवश्यक है कि पहले से समय तय कर लें। इसी तरह जिस व्यक्ति से आप मिलने जा रहे हैं, उसके बारे में आपको पर्याप्त जानकारी होनी चाहिए। आपके प्रश्न सुविचारित होने चाहिए। आपमें आत्म-विश्वास होना चाहिए। आपके प्रश्न बुद्धिमत्तापूर्ण होने चाहिए। आपके पास साक्षात्कार के समय नोटबुक का होना आवश्यक है। आपको टेप रिकार्डर का सही इस्तेमाल करना आना चाहिए। साक्षात्कार से संबंधित इन सभी बातों पर इस इकाई में विस्तार से चर्चा की गयी है। उन्हें उदाहरणों द्वारा पुष्ट किया है। साथ ही बोध प्रश्नों द्वारा आप इकाई को कितना समझ रहे हैं, इसकी परीक्षा कर सकते हैं।

इकाई में बीच-बीच में अभ्यास दिये हैं। इनको करने से आप में साक्षात्कार लेने की क्षमता का विकास होगा। आप अपने आस-पड़ौस या मित्रों से साक्षात्कार लें और अपने अभ्यास को बढ़ायें। यह पाठ्यक्रम व्यवहारमूलक है, इसलिए व्यवहारिक कुशलता का विकास आवश्यक है। साक्षात्कार के विभिन्न पहलुओं पर प्रकाश डालने के लिए एक वीडियो भी तैयार किया जा रहा है। आप उसे अवश्य देखें। इससे आपको साक्षात्कार लेने में पर्याप्त मदद मिलेगी। आप पत्र-पत्रिकाओं में छपने वाले साक्षात्कारों को ध्यान से पढ़ें और उनकी विशेषताओं और सीमाओं को नोट करें। इससे आपकी अपनी कुशलता का विकास होगा।

6.2 साक्षात्कार का महत्व

पत्र-पत्रिकाओं में फीचर लेखन का एक महत्वपूर्ण अंग है : साक्षात्कार। साक्षात्कार अर्थात् किसी अन्य व्यक्ति से मिलकर और उससे बातचीत कर किसी विषय विशेष के बारे में उससे उसका पक्ष जानना। आप पत्र-पत्रिकाओं में लगातार साक्षात्कार पढ़ते होंगे। राजनेताओं, मंत्रियों, अभिनेताओं, साहित्यकारों, कलाकारों आदि के साक्षात्कार प्रायः प्रकाशित होते रहते हैं। उदाहरण के लिए बजट के समय प्रमुख अर्थशास्त्रियों से साक्षात्कार कर उनकी राय ली जाती है। इसी प्रकार क्रिकेट टैस्ट मैचों के दौरान प्रसिद्ध खिलाड़ियों से साक्षात्कार लिये जाते हैं। साक्षात्कार हमेशा प्रतिष्ठित व्यक्तियों से ही नहीं लिये जाते, आम आदमी से भी साक्षात्कार लिये जाते हैं। उदाहरण के लिए बजट के प्रभाव का जायजा लेने के लिए आप किसी गृहिणी, मजदूर, दुकानदार, सरकारी कर्मचारी आदि से साक्षात्कार ले सकते हैं। इस तरह के साक्षात्कार से आपको यह जानकारी मिलेगी कि जनता के विभिन्न हिस्से बजट के बारे में क्या सोचते हैं।

साक्षात्कार के संबंध में मुख्य बात यह है कि इससे हम उस व्यक्ति के विचार उसी के शब्दों में जान सकते हैं, जिससे हम साक्षात्कार लेते हैं। इससे विषय विशेष के संबंध में उस व्यक्ति के विचारों को जानने के बाद पाठक स्वयं अपना निष्कर्ष निकाल सकता है। उदाहरण के लिए एक साक्षात्कार के निम्नलिखित अंश को देखिए :

प्रश्न : *पहले की और आज की पत्रकारिता में आप क्या अंतर देखते हैं?*

उत्तर : *पत्रकारिता ज्यादा पेशेवर और व्यवसायिक होती गई है और होती जा रही है। शुरू के पत्रकार कुछ आदर्शवादी पत्रकार थे और अधिकतर संपादक और मालिक अलग नहीं थे। उनकी दृष्टि और आदर्श अलग-अलग नहीं थे। अब पत्रकार अधिकतर नौकरी करने वाले हैं। मालिक दूसरा है। मालिकों की दृष्टि व्यवसायिक होती है, पत्रकारों की दृष्टि उन्हीं के अनुरूप हो जाती है। सभी पत्रों के लिए बिक्री बढ़ाना जरूरी है। लोगों का मत बदलना, इसका महत्व कम है। पत्र या पत्रिका बिके, इसका महत्व ज्यादा है। इसके जो परिणाम होते हैं वे पत्रकारिता में दीख ही रहे हैं।*

(अज्ञेय से साक्षात्कार. जनसत्ता, 3 अप्रैल 1988 में प्रकाशित।)

उपर्युक्त अंश में अज्ञेय ने पत्रकारिता के संबंध में जो विचार प्रस्तुत किये हैं उससे पाठक स्वयं निष्कर्ष निकाल सकता है कि वे पहले की पत्रकारिता और आज की पत्रकारिता में क्या अंतर करते हैं। पाठक अपने अनुभव द्वारा उनके विचारों की परीक्षा भी कर सकते हैं।

साक्षात्कार का लाभ यह भी है कि इसके माध्यम से किसी घटना या विषय विशेष के संबंध में विभिन्न दृष्टिकोणों को प्रस्तुत किया जा सकता है। उदाहरण के लिए "बजट" को लिया जा सकता है। बजट पर मिलने वाली प्रतिक्रियाएँ प्रायः अलग-अलग दृष्टिकोणों और हितों का प्रतिनिधित्व करती हैं। राजनीतिक दल अपनी दलीय नीति के अनुसार बजट का समर्थन और विरोध करते हैं। दुकानदार अपने व्यवसायिक हित को ध्यान में रखता है। नौकरी पेशा व्यक्ति को महँगाई और आयकर में छूट की ज्यादा चिंता होती है। गरीब तबकों को आम जरूरत की चीजों के दाम परेशान करते हैं। कहने का अर्थ यह है कि साक्षात्कार के द्वारा हम समाज के विभिन्न समूहों के विचारों से परिचित होते हैं और उन्हें समाज के अन्य समूहों तक पहुँचाते हैं।

साक्षात्कार और विचार-विमर्श में अंतर होता है। साक्षात्कार विचार-विमर्श नहीं है। इसलिए भेंटकर्त्ता (प्रश्नकर्त्ता) को अपने विचारों के प्रति आग्रही नहीं होना चाहिए। पाठक साक्षात्कारी (साक्षात्कार देने वाला) के विचार जानना चाहता है न कि भेंटकर्त्ता के। इसलिए प्रश्नकर्त्ता को हमेशा सावधानीपूर्वक प्रश्न पूछने चाहिए और उस उद्देश्य को हमेशा सामने रखना चाहिए जिससे प्रेरित होकर उसने व्यक्ति विशेष से साक्षात्कार करने का निर्णय लिया है। निरुद्देश्य लिया गया साक्षात्कार आपसी बातचीत होकर रह जाता है और पाठक ऐसे साक्षात्कार से कुछ हासिल नहीं कर पाता। प्रश्नकर्त्ता को हमेशा साक्षात्कार को महत्वपूर्ण मानना चाहिए। यह समझना चाहिए कि वह साक्षात्कार के माध्यम से एक सामाजिक दायित्व पूरा कर रहा है। साक्षात्कार वस्तुतः एक पुल है जिससे व्यक्ति (जिससे साक्षात्कार लिया जा रहा है) और समाज को एक-दूसरे के नजदीक लाया जाता है। प्रश्नकर्त्ता के माध्यम से समाज ही उस व्यक्ति विशेष से संवाद स्थापित करता है इसलिए प्रश्नकर्त्ता का दायित्व व्यापक भी है और गंभीर भी। इसलिए प्रश्नकर्त्ता को साक्षात्कार लेने से पूर्व पूरी तैयारी करनी चाहिए और पूरी गंभीरता के साथ इंटरव्यू लेना चाहिए।

6.3 साक्षात्कार के प्रकार

साक्षात्कार के लिए व्यक्तियों का चयन किसी कारण विशेष से किया जाता है। उदाहरण के लिए काश्मीर की समस्या पर गृह मंत्री का साक्षात्कार। यहाँ साक्षात्कार का उद्देश्य मुफ्ती मुहम्मद सईद नामक व्यक्ति से उनका व्यक्तिगत परिचय प्राप्त करना नहीं है बल्कि उद्देश्य मुफ्ती मुहम्मद सईद नामक व्यक्ति जो भारत का गृह मंत्री है उससे काश्मीर संबंधी समस्या पर बातचीत करना है। यहाँ साक्षात्कारी (अर्थात् जिसका साक्षात्कार लिया जाना है) गृह मंत्री के रूप में उत्तर देगा। इस तरह के इंटरव्यू किसी विषय विशेष पर आधारित होंगे। अन्य उदाहरण लें, जैसे सुनील गावस्कर से क्रिकेट के बारे में बात करना, नागार्जुन से उनकी कविताओं या साहित्य के संबंध में बात करना या बाबा आमटे से पर्यावरण के बारे में बात करना—वस्तुतः विषय-आधारित साक्षात्कार ही कहलायेंगे। यह भी संभव है कि आप किसी साहित्यकार से राजनीति के बारे में या किसी खिलाड़ी से सामाजिक हालात के बारे में बातचीत करें किन्तु यहाँ भी महत्व विषय का है इसलिए ऐसे इंटरव्यू भी विषय-आधारित इंटरव्यू कहलायेंगे।

लेकिन कुछ इंटरव्यू ऐसे भी होते हैं जिनमें किसी क्षेत्र विशेष में उल्लेखनीय कार्य करने वाले व्यक्ति के व्यक्तित्व से परिचित कराना उद्देश्य होता है। उदाहरण के लिए प्रसिद्ध चित्रकार मकबूल फिदा हुसैन से उनके व्यक्तिगत जीवन, अभिरुचियों, कार्यों, विचारों तथा मान्यताओं के संबंध में बातचीत करना। यहाँ उद्देश्य ही मकबूल फिदा हुसैन के व्यक्ति को उजागर करना है, इसलिए ऐसे साक्षात्कार व्यक्ति-आधारित साक्षात्कार कहलायेंगे, न कि विषय-आधारित।

इस प्रकार हम साक्षात्कार के मोटे तौर पर दो भेद कर सकते हैं:

i) व्यक्ति-आधारित साक्षात्कार, और

ii) विषय-आधारित साक्षात्कार

6.3.1 व्यक्ति-आधारित साक्षात्कार

व्यक्ति-आधारित साक्षात्कार में किसी व्यक्ति-विशेष का व्यक्तित्व केन्द्र में होता है। इस तरह के साक्षात्कार में प्रश्नकर्त्ता आमतौर पर ऐसे प्रश्न पूछता है जो उस व्यक्ति के व्यक्तित्व के विभिन्न पहलुओं को उजागर करे। इस तरह के साक्षात्कार में व्यक्ति के निजी जीवन के बारे में भी सवाल पूछे जाते हैं। उसका कोई सीमित क्षेत्र नहीं होता। प्रश्नकर्त्ता को ही यह तय करना होता है कि वह उस व्यक्ति के व्यक्तित्व के किन पहलुओं को और कितना उजागर करे और इसके लिए किस तरह के प्रश्न पूछे। इस प्रकार के इंटरव्यू में प्रश्नों का रूप कुछ इस तरह का होता है :

- *क्या आपको बचपन से ही क्रिकेट का शौक था?*
- *लिखने की प्रेरणा आपको किससे मिली?*
- *आपके व्यक्तित्व पर आपकी माता का असर अधिक है या पिता का?*
- *स्कूली शिक्षा के दौरान भी आप इतने ही गंभीर थे?*

उपर्युक्त प्रश्नों से हमें व्यक्ति-विशेष के निजी जीवन और उसकी अभिरुचियों, प्रवृत्तियों आदि का ज्ञान होता है और इससे हमें उस व्यक्ति के व्यक्तित्व का परिचय मिलता है। इसी तरह के व्यक्ति-आधारित इंटरव्यू का एक अंश देखिए :

प्रश्न : *आपके बारे में आमतौर पर कहा जाता है कि आपको बहुत जल्दी गुस्सा आ जाता है?*

उत्तर : *यह सही नहीं है। गुस्सा आता है, लेकिन तभी जब मैं कोई गलत काम होते देखता हूँ। आमतौर पर मेरी कोशिश होती है कि किसी के काम में दखल न दूँ। लेकिन जानते-बूझते गलत काम होने देना मेरी नैतिकता के खिलाफ है। इसी चीज का जब मैं दृढ़ता से विरोध करता हूँ तो लोग मुझे गुस्सैल और तुनुक मिजाज कहने लगते हैं।*

प्रश्न : *लेकिन अगर आपका दृष्टिकोण सही है तो आपका समर्थन भी लोग करते होंगे?*

उत्तर : *निश्चय ही, जहाँ तक मेरा अनुभव है, आमतौर पर लोगों ने मेरा समर्थन ही किया है। विरोध तो केवल दो-चार स्वार्थी लोगों ने ही किया है।*

उपर्युक्त साक्षात्कार से उस व्यक्ति के स्वभाव और रुझान का अनुमान लगाया जा सकता है। व्यक्ति-आधारित इंटरव्यू का एक स्वरूप यह भी हो सकता है कि इसमें किसी क्षेत्र विशेष में दक्षता-प्राप्त करने वाले व्यक्ति की मानसिक बुनावट को समझने का प्रयास किया जाए। उदाहरण के लिए एक लेखक या खिलाड़ी से ऐसे आत्मीय और संवेदनात्मक प्रश्न पूछे जाएँ जिससे वह अपनी भावनाओं और अंतःप्रवृत्तियों को पाठकों के सामने खोलकर रख सके।

6.3.2 विषय-आधारित साक्षात्कार

विषय-आधारित साक्षात्कार में व्यक्ति नहीं बल्कि कोई विषय, घटना या विचार महत्वपूर्ण होता है। इस तरह के इंटरव्यू भी किसी व्यक्ति विशेष से ही लिये जाते हैं, लेकिन प्रायः उनसे निजी किस्म के प्रश्न नहीं पूछे जाते। दूसरे, इस तरह के इंटरव्यू में प्रश्नकर्त्ता के सामने निश्चित उद्देश्य होता है और आमतौर पर उसके प्रश्न उसी उद्देश्य के इर्द-गिर्द घूमते हैं। उदाहरणत:

प्रश्न : *दूसरी बात जो आपने कही—जहाँ विचार-प्रधान हो वहाँ दूसरी तरह की कविता भी हो सकती है। तो ऐसा भी हो सकता है कि आपने कविता के माध्यम से कुछ विचार प्रेषित करना चाहा हो?*

उत्तर : *ऐसा है कि विचार जब आये तो हमने गद्य ही लिखा। ऐसा संयोग हुआ या उसमें जिज्ञासा इतनी थी, तर्क देना था तो जब विचार की बात आयी मैंने गद्य लिखा। दोनों चीजें थीं, समाधान भी, जिज्ञासा भी, तर्क भी, वह कविता में नहीं आता था। गीत में तो नहीं आ सकता। चाणक्य की नीति को गा तो नहीं सकते।*

प्रश्न : *लेकिन आपके गद्य में बहुत से ऐसे गुण हैं जो काव्य के माने जाते हैं। वैसे मानक गद्य है वह, लेकिन काव्यमय भी बहुत है। तो गद्य लिखने की ओर आपकी रुचि इसलिए हुई या बढ़ी, या अभी तक आप यही मानती हैं कि गद्य का क्षेत्र अलग है, काव्य का अलग है?*

उत्तर : ऐसा मानती हूँ अब भी। क्योंकि एक में हम बुद्धि को छूना चाहते हैं, जिज्ञासा जगाना चाहते हैं और चाहते हैं कि प्रश्न करे कोई। और एक में हम संप्रेषण चाहते हैं, एकदम एकता चाहते हैं। तो ऐसा होता है कि कविता में हम वहां ले जाते हैं—जिसको साधारणीकरण कहें या न कहें लेकिन वह हृदय को छूना चाहती है। तो भाषा का फर्क हो ही जाएगा। और एक में हम तर्क करना चाहते हैं, समाधान लेना या देना चाहते हैं। तो कविता में उसका विस्तार मुझे लगता है, नहीं है, महाकाव्य में हो सकता है।

प्रश्न : लेकिन संप्रेषण की बात या साथ ले चलने की बात गद्य के लिए भी उतनी ही आवश्यक है, वह बहा न भी ले चले।

उत्तर : लेकिन बुद्धि ग्रहण दूसरी तरह करती है, हृदय दूसरी तरह करता है। आप किसी को रोते देखें या कोई घटना देखें तो उसका प्रभाव बुद्धि पर दूसरा पड़ता है, हृदय पर दूसरा पड़ता है।

प्रश्न : तो क्या इष्ट यह नहीं हो सकता कि दोनों का सामंजस्य हो?

उत्तर : पूरी तरह नहीं होगा कभी सामंजस्य, ऐसा मुझको लगता है। गद्य रहेगा अपने ढंग से और शायद बहुत शक्तिशाली भी। जहाँ तक कविता का प्रश्न है वह प्रभाव छोड़ती है, संस्कार छोड़ती है और मैं समझती हूँ कि अच्छी कविता आपको किसी समस्या में उलझा कर नहीं छोड़ेगी।...

(महादेवी वर्मा से अज्ञेय की बातचीत, दिनमान 4-10 दिसम्बर, 1983)

उपर्युक्त साक्षात्कार को देखें तो हम आसानी से समझ सकते हैं कि इसका एक निश्चित विषय क्षेत्र है और प्रश्नकर्त्ता ने अपने प्रश्न उस क्षेत्र के इर्द-गिर्द ही बुने हैं। ऐसे साक्षात्कार को हम विषय-आधारित साक्षात्कार कहेंगे।

विषय–आधारित इंटरव्यू दो प्रकार के हो सकते हैं:

i) सूचनात्मक साक्षात्कार, और
ii) व्याख्यात्मक साक्षात्कार

i) सूचनात्मक साक्षात्कार : सूचनात्मक साक्षात्कार में मुख्य उद्देश्य पाठकों तक सूचना पहुँचाना है। किसी घटना के संबंध में उससे संबंधित किसी अधिकारी व्यक्ति या व्यक्तियों का साक्षात्कार लेकर लोगों के मन में उस घटना से उत्पन्न विभिन्न जिज्ञासाओं का समाहार करना होता है। उदाहरण के लिए, रेल दुर्घटना या बाढ़ या चीनी और तेल की बढ़ती किल्लत ऐसे किसी मुद्दे पर संबंधित अधिकारी से बात करके लोगों तक उससे संबंधित नवीनतम जानकारी पहुँचाई जा सकती है।

उदाहरण : रेल दुर्घटना पर रेल मंत्री से बातचीत

***प्रश्न** : इस दुर्घटना के पीछे आप क्या कारण मानते हैं?*

***उत्तर** : अभी निश्चित रूप से कुछ कहना कठिन है। हमने जाँच का आदेश दे दिया है। रेलवे बोर्ड के अध्यक्ष दुर्घटना के कारणों की जाँच करेंगे और अपनी रिपोर्ट एक माह के भीतर दे देंगे।*

***प्रश्न** : क्या आपको इस दुर्घटना के पीछे आतंकवादियों का हाथ लगता है?*

***उत्तर** : दुर्घटना से प्रभावित लोगों से बातचीत करने से मुझे ऐसा नहीं लगता। फिर भी जाँच के दौरान इस संभावना पर भी विचार किया जाएगा।*

***प्रश्न** : यात्रियों की सुरक्षा के लिए आप क्या कदम उठाने जा रहे हैं?*

***उत्तर** : हमने रेलगाड़ियों में सुरक्षा बलों की संख्या में और वृद्धि करने का आदेश दिया है। रेल पटरियों की सुरक्षा के लिए भी और व्यापक प्रबंध किये जा रहे हैं। जनता से हमारी भी अपील है कि ऐसी वस्तु लेकर न चले जिससे किसी भयंकर दुर्घटना होने का अंदेशा हो। अगर कोई आपत्तिजनक वस्तु डिब्बों में दिखाई दे तो तत्काल पुलिस या रेल अधिकारियों को सूचित करें।*

इस तरह के साक्षात्कार में प्रश्नकर्त्ता के लिए यह जानना जरूरी है कि

i) पाठक किन समस्याओं से उद्वेलित हैं?
ii) इनके संबंध में वे क्या जानना चाहते हैं?
iii) इनके बारे में अधिकतम और अधिकारिक सूचना कौन दे सकता है।

प्रश्नकर्त्ता को चाहिए कि वह समस्या से संबंधित सभी महत्वपूर्ण तथ्यों से स्वयं भी भलीभांति परिचित हो। उदाहरण के लिए, रेल दुर्घटना से संबंधित रेल मंत्री से साक्षात्कार का निम्नलिखित अंश देखिए।

प्रश्न : *मंत्री जी, अभी तक आपने रेल दुर्घटना से प्रभावित लोगों के लिए सहायता राशि की घोषणा नहीं की है?*

उत्तर : *आपका यह कहना गलत है? दुर्घटना के तत्काल बाद ही मैंने सहायता राशि की घोषणा कर दी थी और यह रेडियो और टी.वी. दोनों से प्रसारित भी हुई थी।*

इस तरह के प्रश्नोत्तर प्रश्नकर्त्ता की कमजोरी को दर्शाते हैं। इसके विपरीत अगर प्रश्नकर्त्ता को सही तथ्यों की पर्याप्त जानकारी होती तो वह अधिक सार्थक प्रश्न पूछ सकता था।

प्रश्न : *आपने दुर्घटना से प्रभावित लोगों के लिए जो सहायता राशि की घोषणा की है, क्या वह पर्याप्त है?*

प्रश्न : *क्या आप इसे बढ़ाने पर विचार कर रहे हैं?*

उपर्युक्त प्रश्नों से स्पष्ट है कि प्रश्नकर्त्ता को तथ्यों की सही जानकारी है और उसे यह भी मालूम है कि जनता क्या जानना चाहती है। इन प्रश्नों के उत्तर से स्वयं लोगों के मन में उठने वाले प्रश्नों का उत्तर मिल सकता है। इस तरह के इंटरव्यू में "टाइम" एक महत्वपूर्ण पक्ष है। अगर साक्षात्कार सही समय और अवसर पर प्रकाशित नहीं हुआ तो वह अपेक्षित प्रभाव नहीं छोड़ेगा। इसलिए इस तरह के इंटरव्यू के लिए तत्काल तैयारी करनी चाहिए। कई बार तो ऐसे इंटरव्यू टेलीफोन द्वारा ही ले लिये जाते हैं।

ii) व्याख्यात्मक साक्षात्कार : इस तरह के साक्षात्कार में साक्षात्कारकर्त्ता का उद्देश्य किसी समस्या या घटना विशेष के संबंध में ज्ञात तथ्यों के प्रकाश में व्यक्ति-विशेष के विचार जानना है। ऐसे साक्षात्कार में प्रश्नकर्त्ता स्वयं तथ्य प्रस्तुत करता है और साक्षात्कारी से उनके संबंध में स्पष्टीकरण या उसके विचार पूछता है। इस तरह के साक्षात्कार का उद्देश्य यह है कि इससे लोगों को साक्षात्कारी का पक्ष प्रामाणिक रूप में ज्ञात हो जाता है। इससे पाठक स्वयं सही-गलत का निर्णय ले सकता है। प्रश्नकर्त्ता को चाहिए कि वह ऐसे ही प्रश्न पूछे जो कथित घटना या समस्या के संबंध में साक्षात्कारी के पक्ष के सभी पहलुओं को उजागर कर सके। इसलिए इस तरह के साक्षात्कार में प्रश्नकर्त्ता को उत्तर के अनुसार प्रतिप्रश्न पूछने के लिए तैयार रहना चाहिए लेकिन यह भी ध्यान रखना चाहिए कि कहीं वह साक्षात्कारी से बहस में न उलझ जाए। प्रश्नकर्त्ता को चाहिए कि वह प्रश्न पूछते हुए सजग रहे। प्रश्न संक्षेप में परन्तु सधी हुई भाषा में पूछे। प्रश्न स्पष्ट हो जिसे समझने में कोई कठिनाई न हो। अन्यथा उत्तर अस्पष्ट और उलझा हुआ मिलेगा। जो भी उत्तर मिले उसके मंतव्य को समझते हुए अगर आवश्यक हो तो तत्काल प्रतिप्रश्न पूछना चाहिए।

प्रश्नकर्त्ता को इस तरह के साक्षात्कार में तथ्यों या सूचनाओं के बारे में पूछने से बचना चाहिए बल्कि तथ्यों या सूचनाओं को आधार बनाकर अपने प्रश्न पूछने चाहिए। उदाहरण के लिए सरकार ने नयी शिक्षा नीति की घोषणा की है और इस संबंध में आप शिक्षा मंत्री से साक्षात्कार लेना चाहते हैं तो शिक्षा मंत्री से यह मत पूछिए कि नयी शिक्षा नीति क्या है? इसकी जानकारी आपको पहले से होनी चाहिए। नयी शिक्षा नीति का अध्ययन कीजिए और उसके संबंध में स्पष्टीकरण या व्याख्या माँगिए।

निम्नलिखित प्रश्नोत्तर को देखिए, इससे स्पष्ट हो जाएगा कि व्याख्यात्मक साक्षात्कार में किस तरह के प्रश्न पूछे जाते हैं:

प्रश्न : *नयी शिक्षा नीति की समीक्षा करते वक्त किन मुद्दों पर आप खास तौर से ध्यान देंगे।*

उत्तर : *इस बारे में संसद में दिया गया हमारा बयान एकदम स्पष्ट था कि यह कदम 1986 से लागू शिक्षा नीति का पुनरावलोकन है। अब सवाल यह उठता है कि किस बात की समीक्षा की जानी चाहिए? 1964 में पहली बार कोठारी आयोग द्वारा यह लक्ष्य निर्धारित किया गया था कि सकल राष्ट्रीय आय का 6% शिक्षा में व्यय किया जाए। इस लक्ष्य को बाद की सभी सरकारों ने अपनाया भी किन्तु इसको कभी पूरी तरह लागू नहीं किया जा*

सका। वर्तमान में यह 4.2% है, जो 1400 करोड़ होता है। हमने घोषणा-पत्र में वायदा किया था कि हम 6% के लक्ष्य को 1995 तक पा लेंगे। तकरीबन 42 करोड़ भारतीय अशिक्षित हैं। शहरी क्षेत्रों में शिक्षा का प्रतिशत ग्रामीण क्षेत्रों का दुगुना है। शिक्षा पा रही लड़कियों का प्रतिशत लड़कों की तुलना में काफी कम है। हरिजनों में शिक्षा का औसत 10% से भी कम है, जबकि शिक्षा का राष्ट्रीय औसत 36% से भी अधिक है।

प्रश्न : *महिलाओं की शिक्षा के विषय में आप क्या सोचते हैं?*

उत्तर : *हमारा उद्देश्य है कि महिलाओं को ऐसी शिक्षा दी जाए.....*

उपर्युक्त इंटरव्यू राष्ट्रीय मोर्चा सरकार की इस घोषणा के बाद शिक्षा राज्य मंत्री चिमनभाई मेहता से लिया गया है कि सरकार नयी शिक्षा नीति की पुनर्समीक्षा करेगी। इसलिए इसके प्रश्नोत्तर इस घोषणा को विस्तार से स्पष्ट करते हैं और उन कारणों पर प्रकाश डालते हैं जो नयी शिक्षा नीति की पुनर्समीक्षा के आधार हैं।

बोध प्रश्न

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए और अपने उत्तर इकाई के अंत में दिये गये उत्तरों से मिलाइए।

1) निम्नलिखित में से सही कथन के आगे $\surd$ का चिह्न लगाइए।

   क) साक्षात्कार दो व्यक्तियों की पारस्परिक बातचीत है। ( )

   ख) साक्षात्कार के माध्यम से किसी घटना या विषय के संबंध में विभिन्न दृष्टिकोणों को प्रस्तुत किया जा सकता है। ( )

   ग) साक्षात्कार में भेंटकर्त्ता का दृष्टिकोण प्रमुख रहता है। ( )

   घ) साक्षात्कार के द्वारा समाज व्यक्ति-विशेष से संवाद स्थापित करता है। ( )

2) सूचनात्मक साक्षात्कार और व्याख्यात्मक साक्षात्कार में मुख्य अंतर दो-तीन पंक्तियों में स्पष्ट कीजिए।

   .....

   .....

   .....

3) व्यक्ति-आधारित साक्षात्कार की कोई दो विशेषताएँ बताइए।

   .....

   .....

   .....

   .....

4) सूचनात्मक साक्षात्कार में प्रश्नकर्त्ता को किन प्रमुख बातों को ध्यान में रखना चाहिए।

   .....

   .....

   .....

   .....

   .....

5) व्याख्यात्मक साक्षात्कार में प्रश्नकर्त्ता को किन प्रमुख बातों का ध्यान रखना चाहिए।

   .....

   .....

   .....

.....

.....

अभ्यास

1) निम्नलिखित प्रश्नों के आधार पर बताइए कि ये किस तरह के साक्षात्कार के लिए उपयुक्त हैं?

   क) मुख्यमंत्री महोदय, आप अपने मंत्रिमंडल का विस्तार कब कर रहे हैं?

   .....

   ख) रेल के यात्री किराये में वृद्धि करने के पीछे क्या विवशता रही है?

   .....

   ग) आपके उपन्यासों के नायक टूटे हुए, कुंठित और निराशावादी क्यों होते हैं?

   .....

   घ) पारिवारिक जीवन के दायित्व क्या आपके लेखन को प्रभावित नहीं करते?

   .....

   ङ) विश्व कप में भारतीय हाकी टीम की पराजय के लिए आप किसे दोषी मानते हैं?

   .....

2) अपने किसी मित्र से साक्षात्कार लेने के लिए आपके शहर में बढ़ते प्रदूषण के कारणों और उसके निवारण के उपायों पर प्रश्न तैयार कीजिए। प्रश्नों की संख्या पाँच से अधिक न हो।

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

6.4 साक्षात्कार की तैयारी

साक्षात्कार लेने से पूर्व साक्षात्कारकर्त्ता को यह अवश्य जान लेना चाहिए कि उसे इस साक्षात्कार के माध्यम से क्या लक्ष्य प्राप्त करना है अर्थात् साक्षात्कार का उद्देश्य क्या है। क्या साक्षात्कार का उद्देश्य किसी समस्या के विभिन्न पक्षों को उजागर करना है या किसी क्षेत्र विशेष के संबंध में सूचनाएँ लोगों तक पहुँचाना है? आपके साक्षात्कार का उद्देश्य किसी घटना-विशेष के संबंध में संबंधित विशेषज्ञों के विचारों को एकत्र करना है या आप किसी महत्वपूर्ण व्यक्ति के व्यक्तित्व से लोगों को परिचित कराना चाहते हैं? आपके साक्षात्कार का जो भी उद्देश्य हो, सबसे पहला प्रश्न यही अपस्थित होता है कि आप साक्षात्कार के लिए सही व्यक्ति का चुनाव कैसे करें।

6.4.1 व्यक्ति का निर्धारण

सही व्यक्ति के चुनाव के लिए आवश्यक है कि आपको स्वयं विषय-विशेष या घटना-विशेष से संबंधित तथ्यों की पर्याप्त जानकारी हो। यह कार्य बेहतर ढंग से तभी संभव है जब वह क्षेत्र-विशेष आपकी अभिरुचि और विशेषज्ञता से संबंधित हो। उदाहरण के लिए आप किसी क्रिकेट खिलाड़ी का साक्षात्कार लेना चाहते हैं परन्त् आपकी दिलचस्पी

क्रिकेट के बारे में बिल्कुल नहीं है तो आप साक्षात्कारी को अपने प्रश्नों से प्रभावित नहीं कर पायेंगे। हो सकता है आपकी अनभिज्ञता साक्षात्कारी को असंतुष्ट कर दे।

जब क्षेत्र स्वयं आपकी दिलचस्पी और विशेषज्ञता का होगा तो आप अधिक बेहतर ढंग से अपने प्रश्नों का निर्माण कर सकेंगे। आपके समझदारीपूर्ण प्रश्नों से साक्षात्कारों को भी इंटरव्यू देते हुए प्रसन्नता होगी। और यह भी संभव है कि वह ऐसे प्रश्नों के उत्तर देने के लिए भी तैयार हो जाए, जिस पर आम तौर पर वह अपना मत व्यक्त करने को तैयार नहीं होता।

सही क्षेत्र के निर्धारण के साथ यह भी ध्यान रखना चाहिए कि जिस विषय पर आप इंटरव्यू लेना चाहते हैं उसकी प्रासंगिकता क्या है? अर्थात् क्या पाठक उस इंटरव्यू को दिलचस्पी के साथ पढ़ेगा? मान लीजिए आप किसी ऐसे विषय पर इंटरव्यू लेते हैं जिसमें उस पत्र-पत्रिका के पाठकों की कोई रुचि नहीं है तो आपका इंटरव्यू अनपढ़ा ही रह जाएगा।

अंत में, आपको यह विचार करना चाहिए कि इंटरव्यू के लिए हम किसका चयन करें। यह सोचिए कि उस क्षेत्र-विशेष के लिए सही अधिकारी व्यक्ति कौन हो सकता है? क्या वह सरलता से इंटरव्यू देने के लिए तैयार हो जाएगा?

क्या पाठक उस व्यक्ति के इंटरव्यू में दिलचस्पी लेंगे?

मान लीजिए, आप अपने शहर की बिजली-व्यवस्था के संबंध में इंटरव्यू लेना चाहते हैं तो कोशिश कीजिए कि बिजली-विभाग के सबसे बड़े अधिकारी से आप साक्षात्कार लें। विश्वविद्यालय में छात्रों के प्रवेश संबंधी कठिनाइयों के लिए आप कुलपति से बात करें। साथ ही आप बिजली समस्या पर बिजली उपभोक्ताओं का इंटरव्यू भी ले सकते हैं और प्रवेश के संबंध में छात्रों और उनके संरक्षकों आदि से भी बातचीत कर सकते हैं। इसलिए पहले आपको यह तय करना होगा कि आपको किन-किन से इंटरव्यू लेना है जिनके मतों को जानने में पाठकों की दिलचस्पी होगी।

शुरुआत के लिए आपको अपने आसपास के लोगों का इंटरव्यू लेकर अभ्यास करना चाहिए। आप अपने कालेज की फुटबाल टीम के कप्तान का इंटरव्यू ले सकते हैं? अपने मुहल्ले या कालोनी के किसी बुजूर्ग व्यक्ति से रिटायर्ड जीवन की मुश्किलों के बारे में बात कर सकते हैं?

6.4.2 पूर्वानुमति

जब आप यह तय कर लें कि आपको किसका इंटरव्यू लेना है तो सबसे पहले आपको उस व्यक्ति से संपर्क करके उससे इंटरव्यू के लिए अनुमति प्राप्त करनी चाहिए। यह कार्य आप व्यक्तिगत मुलाकात द्वारा, टेलीफोन द्वारा या पत्र द्वारा कर सकते हैं। अनुमति लेने के लिए आपको अपने इंटरव्यू का मकसद तथा विषय स्पष्ट करना चाहिए। यह बताना चाहिए कि इंटरव्यू का उद्देश्य प्राप्त करने में साक्षात्कारी का योगदान क्यों महत्वपूर्ण है तथा किस पत्र-पत्रिका के लिए आप इंटरव्यू लेना चाहते हैं। अनुमति मिल जाने पर आप इंटरव्यू के लिए दिन, समय और स्थान भी साक्षात्कारी के साथ तय कर लीजिए। यह ध्यान रखना चाहिए कि इंटरव्यू के लिए साक्षात्कारी को पर्याप्त समय मिले। इंटरव्यू का स्थान निर्धारित करते हुए आप साक्षात्कारी को अपने सुझाव दे सकते हैं, लेकिन निर्णय साक्षात्कारी की सुविधा को ध्यान में रखकर ही करना चाहिए। इंटरव्यू के लिए जितना समय तय हो, आप अपने प्रश्नों को उसी समय-अवधि के अनुसार तैयार कीजिए, लेकिन यह भी ध्यान रखिए कि अगर साक्षात्कारी साक्षात्कार के दौरान ही समय अवधि बढ़ाने के लिए तैयार हो जाता है तो आपके पास साक्षात्कार आगे बढ़ाने के लिए पर्याप्त और महत्वपूर्ण प्रश्न होने चाहिए।

6.4.3 आवश्यक अध्ययन

इंटरव्यू पर जाने से पहले आपको संबंधित विषय की पर्याप्त जानकारी हासिल कर लेनी चाहिए। तथ्यों की भी जाँच-परख कर लेनी चाहिए तथा साक्षात्कारी के संबंध में भी आपको सही जानकारी होनी चाहिए। कहीं ऐसा न हो कि आपकी गलत जानकारी या अनभिज्ञता इंटरव्यू के दौरान हास्यास्पद स्थिति पैदा कर दे। विशेष रूप से साक्षात्कारी के संबंध में आपका ज्ञान पूरी तरह से तथ्यों पर आधारित होना चाहिए। इंटरव्यू के दौरान वार्तालाप निम्नलिखित ढंग से नहीं चलना चाहिए

प्रश्न : *आप लंबे समय तक लोकसभा के सदस्य भी रहे हैं इस नाते आप इस समस्या के बारे में क्या सोचते हैं?*

उत्तर : *मैं लोकसभा का सदस्य कभी नहीं रहा, सिर्फ एक अवधि के लिए राज्यसभा का सदस्य रहा हूँ?*

या

प्रश्न : *आपने जो कपड़ा नीति लागू की उसके बाद भी कपड़ा उद्योग में कोई सुधार नहीं आया है?*

उत्तर : *देखिए, अभी हमने नयी कपड़ा नीति लागू नहीं की है, अभी तो हम पूर्व सरकार की कपड़ा नीति की समीक्षा ही कर रहे हैं, उसके बाद ही कपड़ा नीति में परिवर्तन के संबंध में कुछ कहना संभव होगा।*

जब साक्षात्कार उपर्युक्त ढंग से चलता है तो पाठक की नज़र में साक्षात्कारकर्त्ता की प्रतिष्ठा कम हो जाती है? पाठक यह सोचने लगता है कि साक्षात्कारकर्त्ता अपने कार्य के प्रति गंभीर नहीं है। इसलिए जरूरी है कि साक्षात्कारकर्त्ता को साक्षात्कार से पूर्व आवश्यक अध्ययन और पर्याप्त जानकारी अवश्य प्राप्त कर लेनी चाहिए।

6.5 प्रश्नावली का निर्माण

साक्षात्कार से पूर्व सबसे महत्वपूर्ण काम है प्रश्नावली का निर्माण। साक्षात्कार सोद्देश्यपूर्ण बातचीत है। इसलिए प्रश्नकर्त्ता को प्रश्न निर्माण करते वक्त हमेशा साक्षात्कार का उद्देश्य अवश्य सामने रखना चाहिए। साक्षात्कारकर्त्ता जिस व्यक्ति से, जिस विषय में बातचीत करने जा रहा है, उसके संबंध में उसका ज्ञान पर्याप्त होता है, होना चाहिए। लेकिन इंटरव्यू के दौरान प्रश्नकर्त्ता की स्थिति सिर्फ श्रोता की होती है। उसे साक्षात्कारी से बहस करने से बचना चाहिए और अपनी राय या मत को इंटरव्यू पर हावी नहीं होने देना चाहिए। इससे इंटरव्यू का उद्देश्य ही खत्म हो जाएगा। लेकिन प्रश्नों में आपका ज्ञान और समझदारी अवश्य अभिव्यक्त होनी चाहिए।

6.5.1 प्रश्नों का लेखन

प्रश्न तैयार करने के दो आधार हो सकते हैं। जब प्रश्नकर्त्ता साक्षात्कारी से सिर्फ सूचनाएँ प्राप्त करना चाहता है तो उसके प्रश्नों का स्वरूप अलग होगा। ऐसे प्रश्न आमतौर पर कौन? कब? और कहाँ? द्वारा निर्मित होंगे? जैसे:

- *नयी निर्यात नीति से भारतीय उद्योग को क्या लाभ होगा?*
- *क्रिकेट बोर्ड के इस निर्णय का औचित्य आप कैसे निर्धारित करेंगे?*
- *आप क्यों ऐसा मानते हैं कि नयी उद्योग नीति से निर्यात को बढ़ावा मिलेगा?*

उपर्युक्त सभी प्रश्नों में किसी ज्ञात तथ्य को आधार बनाकर साक्षात्कारी से उसका पक्ष जानने का प्रयास किया गया है।

प्रश्न बनाते हुए यह ध्यान रखना चाहिए कि प्रश्न का उत्तर इतना संक्षिप्त न हो कि आगे प्रश्न पूछना ही संभव न लगे। उदाहरण के लिए यह पूछने कि बजाए कि "क्या आप ईश्वर में विश्वास करते हैं?" यह पूछना चाहिए कि "ईश्वर के संबंध में आपके क्या विचार हैं?" पहले प्रश्न का उत्तर "हाँ" या "नहीं" में होगा और अगर आप पहले से ऐसे उत्तर की आशा नहीं करते तो आप प्रतिप्रश्न नहीं पूछ पायेंगे और साक्षात्कार में अवरोध उत्पन्न हो जाएगा? दूसरे, बात आगे बढ़ाने के लिए अंततः फिर उसी प्रश्न पर आना होगा यानी आपको पूछना होगा कि *"आपके विश्वास या अविश्वास का आधार क्या है?"* इसलिए व्याख्या वाले प्रश्नों में हमेशा क्यों और कैसे की ध्वनि विद्यमान रहनी चाहिए अन्यथा उत्तर स्पष्ट और पूर्ण प्राप्त नहीं होंगे।

- *क्या आपकी पार्टी संसद में दल-बदल विधेयक का समर्थन करेगी?*
- *क्या आपकी पार्टी राष्ट्रीय मोर्चा सरकार में शामिल होगी?*

इस तरह के प्रश्नों से जो उत्तर प्राप्त होंगे वे "हाँ" या "नहीं" या साक्षात्कारी "टिप्पणी नहीं" कहेगा। लेकिन इतना तय है कि उत्तरकर्ता को कोई न कोई स्पष्ट अभिमत प्रकट करना होगा। अगर वह इसके बावजूद गोलमोल उत्तर देगा तो पाठकों के सामने उस नेता की "दुविधा" भी स्पष्ट हो जाएगी।

6.5.2 मुख्य बातें

प्रश्नों की भाषा साक्षात्कारी के प्रति पूर्वग्रह से ग्रस्त नहीं होनी चाहिए। न उसे चुभने वाली और न अपमानित करने वाली बात कहनी चाहिए। हाँ, यह संभव है कि कभी-कभी इंटरव्यू के दौरान आप कुछ ऐसे तीखे प्रश्न पूछें कि उत्तरकर्त्ता कुछ सीमा तक उत्तेजित हो जाए। लेकिन ऐसे अवसरों पर भी आप में व्यक्तिगत दुराग्रह व्यक्त नहीं होना चाहिए और पाठक को यह महसूस होना चाहिए कि आपका उद्देश्य पाठकों तक सच्चाई पहुँचाना है। व्यक्तिगत जीवन से संबंधित ऐसे प्रश्न न पूछें जो साक्षात्कारी के लिए अपमानजनक हों। प्रश्न पूछते हुए साक्षात्कारी आमतौर पर प्रश्नकर्त्ता के पूर्वग्रह से चिढ़ सकते हैं जैसे ऐसे प्रश्न पूछना:

- *आपने ऐसी जगह से चुनाव लड़ने का* ***बचकाना*** *निर्णय क्यों लिया* ***जहाँ आपका कोई जनाधार नहीं था?***
- *भारतीय टीम में रोज-रोज नयी तब्दीली करने के इस* ***भोंडे नाटक*** *के संबंध में* ***क्या आप कुछ सफाई दे सकते हैं?***

आप स्वयं अनुभव कर सकते हैं कि ये प्रश्न किसी को भी चुभ सकते हैं। प्रश्नों को हमेशा सही और तार्किक क्रम से पूछना चाहिए। इसके लिए जरूरी है कि आप पहले से प्रश्नों की रूपरेखा बना लें। आपको यह भी अनुमान लगाना चाहिए कि आपके प्रश्न का क्या उत्तर मिलने की संभावना है? इस "संभाव्यता" के आधार पर अगले प्रश्न तैयार कीजिए। अगर आपने उत्तरकर्त्ता के बारे में पर्याप्त अध्ययन कर लिया है तो एक हद तक उत्तर का अनुमान पहले से लगा सकते हैं।

अगर प्रश्न के उत्तर आपके अनुमान से अलग मिलते हैं तो आप अपने आगे के प्रश्नों को इंटरव्यू के दौरान ही परिवर्तित कीजिए। अपने तैयार प्रश्नों पर अड़े मत रहिए।

जितना संभव हो प्रश्नों को छोटा और स्पष्ट बनाइए। लंबे और अस्पष्ट प्रश्नों से बचिए। ऐसे प्रश्न उत्तरकर्त्ता को प्रेरित नहीं करेंगे। प्रश्न पूछते हुए आप अपने मत या दृष्टिकोण को विस्तार से बताने की कोशिश मत कीजिए। दो-तीन प्रश्न एक साथ मत पूछिए। एक बार में एक ही प्रश्न पूछिए।

प्रश्न पूछते हुए यह अवश्य ध्यान रखना चाहिए कि वह इतने खुले हुए भी नहीं होने चाहिए कि उसके उत्तर या तो देना ही संभव न हो या इतने लंबे हों कि उनको साक्षात्कार में समेटना कठिन हो जाए। उदाहरण के लिए इस तरह के प्रश्न *"आप अपने बचपन के बारे में बताइए"* या *"आप अभी एक माह तक होनोलूलू में प्रवास करके लौटे हैं, उसके बारे में हमारे पाठकों को कुछ बताइए।"*

इंटरव्यू में प्रश्न पूछते हुए आप स्वयं उत्तर का सुझाव न दें। जैसे *"नयी शिक्षा नीति के बारे में आपका क्या विचार है? मेरे विचार में तो यह शिक्षा नीति शिक्षा के क्षेत्र में मूलभूत परिवर्तन का आधार बनेगी।"* प्रश्न पूछने का यह ढंग प्रश्नकर्त्ता की अपरिपक्वता को दर्शाता है। प्रश्न पूछते हुए उत्तरकर्त्ता को अपनी ओर से उत्तर सुझाने में और भी खतरे हैं।

- *आपको इस बार लोकसभा का टिकट नहीं दिया गया है क्या आपको इसके योग्य नहीं समझा गया या आप स्वयं इच्छुक नहीं थे?*

इस तरह के प्रश्न में आपने अपनी तरफ से दो उत्तर दे दिये हैं। यह भी संभव है कि उत्तरकर्त्ता इन दोनों उत्तरों से सहमत न हो। और वह आपकी बात सिरे से ही काट दे। वह कोई तीसरा जवाब दे। इसलिए बेहतर यही है कि आप सीधे प्रश्न पूछें:

- *इस बार लोकसभा का टिकट नहीं मिलने का क्या कारण है?*

इंटरव्यू के दौरान उत्तरकर्त्ता के दृष्टिकोण से भिन्न दृष्टिकोण या राय आपको ज्ञात हो तो उन्हें आधार बनाकर प्रतिप्रश्न पूछना इंटरव्यू को और अर्थवान् बनाता है। लेकिन ऐसे प्रश्न पूछते हुए आपकी वस्तुपरक निष्पक्षता अवश्य प्रतिबिंब होनी चाहिए। ऐसे प्रश्न पूछने का सही ढंग यह होगा:

- जो लोग यह मानते हैं कि नयी शिक्षा नीति वस्तुतः शिक्षा-विरोधी है, ऐसे मत के संबंध में आपकी क्या प्रतिक्रिया है....
- यह तर्क दिया जाता है कि.... आप इस संबंध में क्या कहना चाहेंगे?

लेकिन ऐसे प्रश्न निम्नलिखित ढंग से कभी न पूछिए

- लेकिन यह भी तो कहा जाता है कि.....
- कुछ लोगों का यह मत है कि.....

यहाँ प्रश्न नहीं पूछे गये हैं बल्कि भिन्न मत प्रस्तुत कर दिये गये हैं। ऐसे कथन का उत्तर देना साक्षात्कारी के लिए आवश्यक नहीं है और ऐसी स्थिति में इंटरव्यू में अवरोध उत्पन्न हो सकता है।

6.5.3 आरंभिक प्रश्न

साक्षात्कार से पूर्व उसका उद्देश्य आपके मस्तिष्क में स्पष्ट होना चाहिए। आपने जिस व्यक्ति से साक्षात्कार लेने का निश्चय किया है, उसे पहले ही अपने उद्देश्य के संबंध में बता दीजिए। इस पर भी उसके साथ विचार कर लीजिए कि आप किस तरह के प्रश्न पूछेंगे और साक्षात्कार का आरंभ कैसे करेंगे।

आपके इंटरव्यू का उद्देश्य क्या है उसके अनुसार अपने प्रश्न बनाइए। अगर किसी दुर्घटना, यात्रा या उल्लेखनीय घटना के संबंध में जानना चाहते हैं तो आपके साक्षात्कार का लक्ष्य उस व्यक्ति की स्मृतियों को जगाना होना चाहिए। आप अगर किसी विशेषज्ञ से बात कर रहे हैं तो आपको उसके ज्ञान को सामने लाने की कोशिश करनी चाहिए। अगर आप किसी समस्या के संबंध में किसी अधिकारी से बात कर रहे हैं तो आप समस्या को आधार बनाकर प्रश्न पूछिए। किसी महत्वपूर्ण लेखक, खिलाड़ी या कलाकार से बात करते हुए उसके कार्यों और उसके व्यक्तित्व को उजागर करने की कोशिश कीजिए।

इंटरव्यू की शुरूआत महत्वपूर्ण होती है। आपका साक्षात्कार कैसे आरंभ हो, इस पर आगे की बातचीत निर्भर करेगी। पहले प्रश्न से आप भूमिका बाँधिए और उसके बाद लक्ष्य की ओर आगे बढ़िए।

उदाहरण के लिए अगर किसी फिल्म अभिनेता से आप साक्षात्कार ले रहे हैं और इंटरव्यू से कुछ अरसे पूर्व उस अभिनेता को कोई पुरस्कार मिला है या कोई फिल्म रिलीज़ हुई है या किसी खास संदर्भ में उसकी चर्चा हुई है तो उसका उल्लेख करते हुए बात शुरू कीजिए अगर किसी प्रतियोगिता के आरंभ होने से पूर्व किसी संबंधित खिलाड़ी का इंटरव्यू लिया जाता है तो उसकी शुरुआत कुछ इस ढंग से की जा सकती है।

प्रश्न : *रिलायंस कप में भारत की संभावनाएँ क्या हैं?*

उत्तर : *मैं क्रिकेट खेलने का सिर्फ एक तरीका जानता हूँ और वह है, जीतने की कोशिश। मुझे पक्का यकीन है कि हम ही जीतेंगे।*

इंटरव्यू के आरंभ में पूछे गये प्रश्न दो काम करते हैं:

i) उत्तरकर्त्ता के साथ प्रश्नकर्त्ता अपना तादात्म्य स्थापित करता है।

ii) पाठकों को बातचीत की भूमिका स्पष्ट होती है। वे अनुमान लगा सकते हैं कि आगे की बातचीत की दिशा क्या होगी। इससे उनकी दिलचस्पी बढ़ती है।

लेकिन यह भी ध्यान रखिए कि आप महत्वपूर्ण प्रश्नों पर जल्दी ही आ जाएँ अन्यथा बाद में समय के अभाव में अधिक महत्वपूर्ण प्रश्न छूट जायेंगे। या यह भी संभव है कि बात किसी अन्य दिशा की ओर मुड़ जाए जिसका महत्व अधिक न हो। "तमस" नामक टी वी सीरियल के प्रसारण के अवसर पर "रविवार" साप्ताहिक ने प्रख्यात कथाकार भीष्म साहनी का साक्षात्कार किया। यह सीरियल उन्हीं के इसी नाम के उपन्यास पर आधारित था। इस

साक्षात्कार का पहला प्रश्न औपचारिक है, लेकिन बातचीत शीघ्र ही अपने उद्देश्य की ओर अग्रसर होने लगती है। साक्षात्कार में पूछे गये प्रश्नों से यह स्पष्ट है:

सवाल *1 :* *''तमस'' के लेखक को अपनी रचना परदे पर देखकर कैसा महसूस हो रहा है।*

सवाल *2 :* *क्या ऐसा नहीं लगता कि यह धारावाहिक उन सभी लोगों को चेतावनी देता है, जो एक बार फिर मुल्क के बँटवारे की बात कर रहे हैं।*

सवाल *3 :* *किस ढंग से? आपके लिहाज से ऐसी कौन-सी बात ''तमस'' उन करोड़ों हिंदुस्तानियों तक पहुँचाता है जो इसे देख या पढ़ रहे हैं?*

बोध प्रश्न

6) साक्षात्कार के लिए सही व्यक्ति का निर्धारण कैसे किया जाना चाहिए? तीन पंक्तियों में उत्तर दीजिए।

.....

.....

.....

7) साक्षात्कारर्त्ता को इंटरव्यू लेने से पूर्व किन-किन बातों का ध्यान रखना चाहिए। लगभग पाँच पंक्तियों में उत्तर दीजिए।

.....

.....

.....

.....

.....

8) निम्नलिखित बातों/समस्याओं के लिए किन-किन व्यक्तियों से इंटरव्यू लेना चाहिए।

क) शहर में बढ़ते अपराधों के संबंध में

.....

ख) महँगाई की समस्या को उजागर करने के लिए

.....

ग) छात्रों के राजनीति में भाग लेने के संबंध में

.....

घ) प्रेमचंद के साहित्यिक अवदान पर

.....

9) साक्षात्कार से पूर्व साक्षात्कारकर्त्ता के लिए अध्ययन की क्यों आवश्यकता है? कोई दो कारण बताइए।

.....

.....

.....

.....

.....

10) प्रश्न पूछते हुए साक्षात्कारकर्त्ता को किन प्रमुख बातों का ध्यान रखना चाहिए।

.....

.....

.....

.....

.....

3) निम्नलिखित प्रश्नों के दो-दो रूप दिये गये हैं। इनमें से कौन-से रूप अधिक उचित हैं, उन पर √ का चिह्न लगाइए।

i) क) आप अज्ञेय को बड़ा कवि मानते हैं या मुक्तिबोध को? ( )

ख) कवि के रूप में आपको अज्ञेय और मुक्तिबोध में क्या समानता और विभिन्नता नजर आती है? ( )

i) क) कुछ लोगों ने इस कांड के साथ आपके नाम को जोड़ने की कोशिश की है। आप इस संबंध में क्या कहना चाहेंगे? ( )

ख) कुछ लोग इस घोटाले में आपका भी हाथ मानते हैं? ( )

iii) क) आपने इस फिल्म में काम करने से इसलिए इंकार किया क्योंकि निर्माता आपको मुहँमांगा पैसा नहीं दे रहा था? फिल्म की सफलता के बाद आपको पछतावा नहीं हो रहा है? ( )

ख) इस फिल्म में काम करने से इंकार करने की क्या वजह थी? फिल्म की सफलता के बाद आप क्या अनुभव करते हैं? ( )

iv) क) इस टेस्ट श्रृंखला में आप इतना खराब क्यों खेले? ( )

ख) इस टेस्ट श्रृंखला में आप अपने खेल का मूल्यांकन किस रूप में करते हैं। ( )

4) अपने किसी मित्र से साक्षात्कार लेने के लिए कुछ प्रश्न लिखिए। विषय हो–मित्र से कालेज में प्रवेश में आने वाली कठिनाइयों को जानना।

.....

.....

.....

.....

.....

6.6 साक्षात्कार लेना

जब आप साक्षात्कार लेने जाएँ तो हमेशा समय पर पहुँचिए। देर से पहुँचने पर यह भी संभव है कि वह व्यक्ति आपकी प्रतीक्षा करके अन्य काम में व्यस्त हो गया हो। यह भी संभव है कि आपके देर से पहुँचने के कारण वह साक्षात्कार के लिए निर्धारित समय न दे सके और यह भी संभव है कि आपके प्रति वह प्रतिकूल रुख अपना ले। ये तीनों स्थितियाँ साक्षात्कार के लिए उचित नहीं हैं। इसलिए बेहतर यही है कि आप समय पर पहुँचे ताकि साक्षात्कारी पर आपका प्रभाव अच्छा पड़े और आप उसका विश्वास जीत सकें।

6.6.1 सहज मनःस्थिति

अगर आप पहली बार साक्षात्कार लेने जा रहे हैं तो आपका घबराना स्वाभाविक है। इसलिए यह बेहतर है कि किसी पत्र-पत्रिका के लिए साक्षात्कार लेने से पहले आप अपने आसपास रहने वालों से इंटरव्यू लेने का अभ्यास कीजिए ताकि आपकी झिझक खत्म हो सके।

अगर आपने इंटरव्यू से पहले पर्याप्त तैयारी कर ली है तो आप निश्चय ही अपने अंदर विश्वास महसूस करेंगे। आप अपने प्रश्नों को एक बार अच्छी तरह से दोहरा लीजिए और प्रश्नों के लिखित रूप को इंटरव्यू के दौरान अपने सामने रखिए। अपनी वेशभूषा सलीकेदार रखिए ताकि साक्षात्कारी पर गंभीर प्रभाव पड़े। यह भी ध्यान रखिए कि आप किनसे मिलने जा रहे हैं। अगर आपकी वेशभूषा का साक्षात्कारी पर प्रतिकूल असर पड़ता है तो साक्षात्कार सुखद माहौल में नहीं हो सकेगा।

जब साक्षात्कार के लिए पहुँचे तो घबराइए मत। जल्दबाजी और हड़बड़ाहट की बजाए धीरे-धीरे सोच-समझकर अपनी बात आरंभ कीजिए। अगर आप किसी बड़े नेता, प्रख्यात अभिनेता या कलाकार से मिलने जा रहे हैं तो भी घबराइए मत। ये सभी लोग हमारी तरह सामान्य इंसान हैं। आमतौर पर इनका व्यवहार मित्रतापूर्ण और सौहार्दता से भरा होता है।

अगर आप भयभीत और संकोची रहेंगे तो अपनी बात ठीक से न रख सकेंगे और न ही साक्षात्कारी के उत्तर सुन पायेंगे। अगर आपके चेहरे पर घबराहट व्यक्त होगी तो साक्षात्कारी भी साक्षात्कार के दौरान सहज नहीं हो पाएगा।

इसलिए आप सहज होकर, पूरी तैयारी और आत्मविश्वास के साथ इंटरव्यू के लिए जाइए।

6.6.2 तादात्म्य

जब आप साक्षात्कार आरंभ करें तो अपने प्रश्नों पर आने से पूर्व साक्षात्कारी से तादात्म्य स्थापित करने की कोशिश कीजिए। साक्षात्कारी के महत्व और व्यस्तता की चर्चा करते हुए उसे बताइए कि यह साक्षात्कार किस उद्देश्य से लिया जा रहा है। साक्षात्कारी को यह भी बताइए कि इंटरव्यू के दौरान आप किस तरह के प्रश्न पूछना चाहते हैं। साक्षात्कारी अगर प्रश्नों के स्वरूप में या क्रम में परिवर्तन चाहता है या कुछ प्रश्न जोड़ना या हटाना चाहता है और इससे आपके उद्देश्य पर कोई प्रतिकूल असर नहीं पड़ता है तो आप साक्षात्कारी के कहे अनुसार परिवर्तन कर लीजिए। यदि साक्षात्कारी के सुझाव आपके उद्देश्य की प्राप्ति में बाधक हैं तो आप उसे अपना पक्ष ठीक से स्पष्ट कीजिए। निश्चय ही एक सफल साक्षात्कारकर्त्ता को अपना व्यवहार लचीला और विनम्र बनाना चाहिए।

6.6.3 आरंभिक चरण का महत्व

साक्षात्कार का आरंभिक चरण महत्वपूर्ण होता है। विषय पर आपकी दक्षता, आपकी गंभीरता, आपकी समझदारी और आपके कुशल व्यवहार का आरंभिक प्रभाव आगे के क्षणों में साक्षात्कारी के व्यवहार को तय करने में मदद करेगा। साक्षात्कारी पर अगर आपके व्यवहार का असर अच्छा पड़ता है तो वह आपको साक्षात्कार में पूर्ण सहयोग देगा। यदि उसे आपके व्यवहार में या इंटरव्यू लेने के तरीके में कोई बात खटकने वाली लगी तो उसका मूड बिगड़ सकता है। इसलिए यह ध्यान रखिए कि आरंभ से ही आपका समग्र प्रभाव साक्षात्कारी के लिए उत्साहवर्द्धक हो।

जिससे आप साक्षात्कार ले रहे हैं, वह अगर अधिक अनुभवी न हो या इंटरव्यू देने का यह उसके लिए पहला अवसर हो तो आपका व्यवहार सहानुभूतिपूर्ण और मित्रवत् होना चाहिए। ऐसे व्यक्ति के साथ आप औपचारिक साक्षात्कार आरंभ करने से पूर्व अनौपचारिक बातचीत शुरू कीजिए। इसी प्रक्रिया में धीरे-धीरे आप अपने प्रश्नों पर आइए। इंटरव्यू का आरंभिक हिस्सा बाद में चाहें तो आप संपादित कर सकते हैं।

साक्षात्कार की जब औपचारिक शुरुआत हो तो आप साक्षात्कारी के उत्तर को ध्यान से सुनिए। उन्हें नोट करते जाइए। अगर इंटरव्यू रिकार्ड नहीं हो रहा है और आप लिखने में पिछड़ रहे हैं तो साक्षात्कारी से विनम्रता से दोहराने के लिए कह दीजिए। कोशिश कीजिए कि आप साक्षात्कारी के बोलने के साथ-साथ लिख सकें। इसमें शार्टहैंड सहायक हो सकती है। अगर शार्टहैंड न भी आती हो तो आप स्वयं शब्दों, पदों या वाक्यों के संकेत विकसित कर सकते हैं जिन्हें पुनर्लेखन के दौरान विस्तार दे सकें।

साक्षात्कारी के बोलते समय आप उसकी बात को ध्यान से सुनिए। साक्षात्कारी को लगना चाहिए कि आप उसकी बात ध्यान से सुन रहे हैं। हाँ, यह अवश्य है कि "हाँ" "हूँ" या "ठीक" "बहुत ठीक" आदि बोलकर उसके बोलने की लय को भंग मत कीजिए।

अगर साक्षात्कारी आरंभ में ही अपनी लय बैठा लेता है तो आपको एक अच्छा साक्षात्कार लेने का श्रेय मिल सकता है।

6.6.4 अन्य जरूरी बातें

साक्षात्कार आरंभ होने के बाद आपके आगे के प्रश्न पहले के प्रश्नों के जवाब में कही गयी बातों पर आधारित होने चाहिए। प्रश्नों में क्रमबद्धता और तार्किकता नजर आनी चाहिए।

यह तभी संभव है, जब आप इंटरव्यू से पूर्व पर्याप्त तैयारी कर चुके हों और साक्षात्कारी से आरंभिक बातचीत कर चुके हों।

कई बार यह भी संभव है कि साक्षात्कारी उत्तर देते हुए गैर जरूरी बातों में भटक जाए। ऐसे में आपका अगला प्रश्न भी आपके उद्देश्य से इतर हो सकता है या आप बातचीत के ऐसे बिंदु पर पहुँच सकते हैं जहाँ आगे बातचीत कैसे और किस दिशा में ले जायी जाए, यह निर्णय लेना कठिन हो जाए। ऐसी स्थिति में आपको अत्यंत सावधानी से बात को पुनः अपने लक्ष्य की ओर मोड़ने की कोशिश करनी चाहिए। आप साक्षात्कारी की बात के महत्व को स्वीकार करते हुए अपना प्रश्न दोहराइए या साक्षात्कारी के उत्तर में से ही कोई सूत्र पकड़ कर उसे वापस अपने उद्देश्य की ओर लाइए। इसके लिए आप अगला प्रश्न निम्नलिखित ढंग से पूछ सकते हैं।

- *आपने अत्यंत महत्वपूर्ण बात कही है। लेकिन इस संबंध में एक भिन्न दृष्टिकोण भी प्रस्तुत किया गया है.... आपका इस संबंध में क्या विचार है?*

या

- *आपने यह जो बात कही है उससे मैं समझता हूँ कि इस बात को इस नजरिए से भी देखा जा सकता है.... क्या आप अपने इस विचार को और स्पष्ट करेंगे?*

कई बार साक्षात्कारी उत्तर देते हुए पूरी तरह से खुलते नहीं। वे आधे अधूरे या टालने वाले उत्तर देकर चुप हो जाते हैं। आमतौर पर ऐसा रुख वे प्रायः विवादास्पद मुद्दों पर अपनाते हैं। जबकि विवादास्पद मुद्दों पर उनका पक्ष विस्तार से जानने पर ही हमारे साक्षात्कार की सफलता निर्भर करती है। इसके लिए यह जरूरी है कि आप पहले साक्षात्कारी का पूरा विश्वास हासिल करें। विनम्रता के साथ प्रश्न पूछें। अगर उत्तर आपके अनुकूल न हो तो, न तो उत्तेजित हों न घबराएँ। आप अपनी बात को आगे बढ़ाएँ, और उसी प्रश्न को किसी भिन्न रूप में पूछें। अगर आप पूरी तैयारी के साथ गये हैं तो आप एक ही बात को कई ढंग से पूछ सकते हैं। धैर्य, विनम्रता और आपकी चतुराई से पूरी संभावना है कि साक्षात्कारी अंततः अपने मन की बात कह दे।

आप इंटरव्यू के लिए जितनी तैयारी के साथ जायेंगे आपको साक्षात्कार में भी उतनी ही अधिक सफलता मिलेगी। अगर आपकी तैयारी ही अपूर्ण है तो आप प्रतिप्रश्न पूछने की क्षमता खो बैठेंगे और फिर आपको जो भी उत्तर मिलेगा उसी से आपको संतुष्ट होना पड़ेगा।

डंटरव्यू के दौरान आप ध्यान से उत्तर सुनिए और त्वरित गति से सोचिए कि अगला प्रश्न क्या पूछा जाना चाहिए। आपकी सजगता और समझदारी साक्षात्कार को जीवंत बनाएगी।

जब साक्षात्कार समाप्ति की ओर बढ़ने लगे या आप अंतिम प्रश्न पूछना चाहें तो अपना प्रश्न इस तरह से पूछें

''अंत में मैं यह जानना चाहूँगा''

''संक्षेप में क्या आप.....''

इससे साक्षात्कारी को अपनी बात का समाहार करने का अवसर मिल सकेगा। जब इंटरव्यू समाप्त हो तो साक्षात्कारी के प्रति आभार अवश्य व्यक्त कीजिए।

6.7 साक्षात्कार की रिकार्डिंग

इंटरव्यू प्रकाशित होने के बाद कई बार साक्षात्कारी उसमें कही गयी बात का खंडन कर देता है। या यह भी कह देता है कि मैंने यह बात इस रूप में या इस संदर्भ में नहीं कही थी। इसलिए बेहतर यह है कि आप इंटरव्यू के दौरान पूरी सावधानी से नोट लें। अपनी स्मरण-शक्ति का भी पूरा उपयोग करें। अगर साक्षात्कारी अनुमति दे तो टेप रिकार्डर का प्रयोग करें। इंटरव्यू प्रकाशन के लिए भेजने से पहले अगर संभव हो तो साक्षात्कारी को दिखा दें ताकि विवाद की गुंजाईश न रहे।

6.7.1 स्मरण-शक्ति

इंटरव्यू के दौरान आपकी एकाग्रता और स्मरण-शक्ति का बहुत महत्व है। कई बार इंटरव्यू के समय साक्षात्कारी द्वारा कही गयी बातों को ठीक उसी रूप में लिख लेना संभव नहीं होता। अगर आपने पूरी एकाग्रता से साक्षात्कारी की बात सुनी है तो आपको बाद में साक्षात्कार का पुनर्लेखन करने में कठिनाई नहीं आएगी।

6.7.2 नोट लेना

इंटरव्यू के दौरान आप नोट अवश्य लीजिए। इसके लिए ऐसी नोट बुक का इस्तेमाल कीजिए जिसे सरलता से उपयोग में लाया जा सके। अपने लिखने की गति को बढ़ाइए। इसके लिए संकेतों का इस्तेमाल कीजिए। साक्षात्कारी की बात को यथासंभव उसी के शब्दों में लिखिए। लेकिन लिखते हुए अपना ध्यान साक्षात्कारी की ओर रखिए। अगर आपका ध्यान साक्षात्कारी की ओर नहीं है तो वह उपेक्षित महसूस कर सकता है। आपका ध्यान अगर साक्षात्कारी की ओर रहेगा तो आप प्रश्नों और उत्तरों के साथ उसके बदलते हाव-भाव को भी नोट कर सकेंगे। कई बार इंटरव्यू के दौरान शब्दों से अधिक महत्वपूर्ण साक्षात्कारी के हाव-भाव होते हैं। हँसना, मुस्कराना, खीझना, उत्तेजना के साथ उत्तर देना या तत्काल उत्तर न देकर थोड़ी देर मौन रहकर उत्तर देना, धारा-प्रवाह बोलना या रुक-रुक कर बोलना। इन सब बातों का इंटरव्यू में महत्व हो सकता है। अगर आपने उत्तर के साथ-साथ इन बातों को भी नोट किया है तो आपका इंटरव्यू और अधिक जीवंत और सार्थक बन सकेगा।

6.7.3 टेप रिकार्डर का प्रयोग

साक्षात्कार के दौरान टेप रिकार्डर का प्रयोग करना इस दृष्टि से उचित है कि इससे साक्षात्कारी की बातों को उसी के शब्दों में प्रस्तुत किया जा सकता है। दूसरे, इससे साक्षात्कार के संबंध में उठने वाले विवाद से बचा जा सकता है। किन्तु टेप रिकार्डर का उपयोग साक्षात्कारी की अनुमति लेकर ही कीजिए। कई साक्षात्कारी टेप रिकार्डर के प्रयोग की अनुमति नहीं देते क्योंकि साक्षात्कार के दौरान अनजाने में साक्षात्कारी कुछ ऐसी बातें भी कह जाता है जिन्हें वह प्रकाशित नहीं करवाना चाहता। अगर ऐसी बातें टेप हो जाती हैं तो उनके उपयोग का खतरा बना रहता है।

टेप रिकार्डिंग का प्रयोग करते हुए यह ध्यान रखिए कि वह ठीक से काम करे। आरंभ में थोड़ी रिकार्डिंग करके सुन लीजिए। कहीं ऐसा न हो कि किसी तकनीकी खराबी के कारण साक्षात्कार रिकार्ड ही न हो। जहाँ तक संभव हो टेप रिकार्डर के लिए सेल का प्रयोग कीजिए ताकि बिजली के अभाव में भी रिकार्डिंग हो सके।

टेप रिकार्डर का प्रयोग करते हुए भी साथ-ही-साथ नोट बुक पर नोट अवश्य लीजिए। कई बार टेप रिकार्डर पर आवाज साफ नहीं सुनाई देती या कोई-कोई शब्द समझ में नहीं आता। ऐसे समय नोट उपयोगी साबित होते हैं।

बोध प्रश्न

11) साक्षात्कार लेने के समय निम्नलिखित बातों का ध्यान रखना आवश्यक है। इनमें से कुछ बातें सही हैं, कुछ गलत। आप सही पर $\surd$ का और गलत पर $\times$ का निशान लगाइए।

क) साक्षात्कार के लिए निर्धारित समय से पंद्रह मिनट देर से पहुँचिए ताकि आप साक्षात्कारी पर अपने महत्वपूर्ण व्यक्ति होने का प्रभाव जमा सकें। (सही/गलत)

ख) साक्षात्कार के लिए सहज होकर, पूरी तैयारी और आत्मविश्वास के साथ जाइए। (सही/गलत)

ग) आप वही प्रश्न पूछिए जो आप पूछना चाहते हैं, चाहे साक्षात्कारी पसंद करे या नहीं। (सही/गलत)

घ) विनम्र और सहानुभूतिपूर्ण व्यवहार से आप उत्तरकर्ता को अपने अनुकूल बना सकते हैं। (सही/गलत)

ङ) साक्षात्कार के लिए पर्याप्त तैयारी के साथ जाइए। (सही/गलत)

12) साक्षात्कारी के साथ तादात्म्य स्थापित करने के लिए क्या करना आवश्यक है? लगभग पाँच पंक्तियों में स्पष्ट कीजिए।

.....

.....

.....

.....

.....

13) एक नये साक्षात्कारी के साथ भेंटकर्ता का व्यवहार कैसा होना चाहिए? लगभग पाँच पंक्तियों में स्पष्ट कीजिए।

.....

.....

.....

.....

.....

14) उत्तरकर्ता अगर किसी विवादास्पद विषय पर स्पष्ट राय न देना चाहे तो भेंटकर्त्ता को क्या करना चाहिए?

.....

.....

.....

.....

15) साक्षात्कार के दौरान नोट लेते वक्त किन-किन बातों की सावधानी अपेक्षित है?

.....

.....

.....

.....

.....

अभ्यास

5) मान लीजिए आपको क्षेत्र के किसी राजनेता से क्षेत्र से संबंधित समस्यायों पर दस मिनट का साक्षात्कार लेना है। इसके लिए पूर्व तैयारी के तौर पर आप पाँच प्रश्न तैयार कीजिए।

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

6) नीचे एक प्रश्न का उत्तर दिया गया है। "तमस" के संदर्भ में पूछे गये एक प्रश्न का भीष्म साहनी द्वारा दिया गया जवाब है। आप इसे पढ़कर प्रश्न की पुनर्रचना कीजिए।

जवाब : 1947 में मेरे अपने शहर रावलपिंडी में दंगे हुए थे। उसके कुछ दिन बाद देश के बँटवारे का फैसला हो गया। एक ऐसा बवंडर मचा, जिसमें लाखों लोग बेघर हुए और हजारों मारे गये। यह सब मैंने अपनी आँखों से देखा और खुद भी भोगा। ये तमाम तस्वीरें उन दिनों मेरे जेहन में थीं। देश आजाद हो गया। लेकिन सांप्रदायिक दंगे नहीं रुके। तब तो हम अंगरेज को दोष दे देते थे। अब सवाल यह पैदा होता है कि किसे दोष दिया जाये? 1974 में ऐसा ही एक दंगा हुआ। शायद भिवंडी में या कहीं और। उस समय मैं अपने आपको न रोक सका और यह उपन्यास लिखना शुरू कर दिया। उपन्यास लिखते वक्त मैंने इस बात की भरसक कोशिश की कि जो कुछ अपनी आँखों से देखा है, झेला है, और अनुभव किया है, उसे कागज पर उतार दूँ और शायद बहुत कुछ ऐसा मैं कर सका। बस यही भावना थी मेरी। मैं लोगों को इस उपन्यास के जरिये चेतावनी देना चाहता था, उन्हें सचेत करना चाहता था।

.....

.....

.....

.....

.....

6.8 सारांश

- साक्षात्कार के लिए आवश्यक तैयारी के बारे में बताना इस इकाई का उद्देश्य रहा है। साक्षात्कार पत्रकारिता का महत्वपूर्ण अंग है। साक्षात्कार में किसी अन्य व्यक्ति से बातचीत द्वारा उसके विचार जाने जाते हैं। यह बातचीत सोद्देश्य होती है। इसके माध्यम से व्यक्ति-विशेष के विचारों को उसी के शब्दों में प्रस्तुत किया जा सकता है। एक ही समस्या या विषय पर एक से अधिक दृष्टिकोणों को प्रस्तुत किया जा सकता है। इस इकाई को पढ़ने के बाद आप साक्षात्कार का महत्व बता सकते हैं।
- साक्षात्कार के उद्देश्य के आधार पर उसके दो भेद किये जा सकते हैं। अगर किसी महत्वपूर्ण व्यक्ति के व्यक्तित्व को उजागर करना साक्षात्कार का उद्देश्य है तो उसे हम व्यक्ति-आधारित साक्षात्कार कहेंगे। यदि साक्षात्कार किसी समस्या या विषय-विशेष के संबंध में व्यक्ति-विशेष के विचार जानने के लिये लिया जाता है तो उसे विषय-आधारित साक्षात्कार कहेंगे। विषय-आधारित साक्षात्कार के भी दो भेद किये जा सकते हैं—सूचनात्मक और व्याख्यात्मक साक्षात्कार। सूचनात्मक साक्षात्कार में सूचना एकत्र करना उद्देश्य होता है जबकि व्याख्यात्मक साक्षात्कार में किसी ज्ञात तथ्य के संबंध में स्पष्टीकरण या पक्ष-विशेष को जानना उद्देश्य होता है। अब आप साक्षात्कार के उपर्युक्त भेदों को परिभाषित कर सकते हैं।
- साक्षात्कार की तैयारी के लिए सबसे पहले तो किस विषय पर, किस व्यक्ति से इंटरव्यू लेना है, इसकी क्या प्रासंगिकता है आदि प्रश्नों पर विचार करना होगा। इंटरव्यू के लिए निर्धारित व्यक्ति से पूर्वानुमति भी आवश्यक है तथा जिस विषय पर साक्षात्कार लेना है, उसके संबंध में आवश्यक अध्ययन भी करना होगा। इंटरव्यू से पूर्व इतनी तैयारी के बिना स्तरीय साक्षात्कार संभव नहीं है, इकाई पढ़ने के बाद आप इंटरव्यू लेते वक्त उक्त बातों का ध्यान रख सकते हैं।
- साक्षात्कार का सबसे महत्वपूर्ण अंग है—प्रश्नावली का निर्माण। साक्षात्कार से पूर्व प्रश्नों का सोच-विचारकर निर्माण करना चाहिए। आपके प्रश्न इंटरव्यू के उद्देश्य को फलीभूत करने वाले होने चाहिए। पहले से तैयार प्रश्नों से आपको इंटरव्यू लेने में सुविधा होगी। प्रश्न स्पष्ट और सरल भाषा में होने चाहिए। ताकि उत्तर भी सही और स्पष्ट मिलें। इकाई को पढ़ने के बाद साक्षात्कार के लिए प्रश्नों के निर्माण में आपकी कुशलता में वृद्धि हो सकेगी।

- साक्षात्कार पूर्ण तैयारी और आत्मविश्वास के साथ लीजिए। हड़बड़ी और घबराहट से आपको सफलता नहीं मिलेगी। उत्तरकर्त्ता से विनम्र व्यवहार कीजिए। उससे तादात्म्य स्थापित करने की कोशिश कीजिए। साक्षात्कार के लिए नोट बुक साथ ले जाइए। अगर अनुमति मिले तो टेप रिकार्डर का भी उपयोग कीजिए। परंतु अगर आप एकाग्रचित्त होकर उत्तर सुनेंगे और अपनी स्मरण-शक्ति पर भरोसा रखेंगे तो वह अधिक लाभप्रद होगा। इस इकाई को पढ़ने के बाद आप साक्षात्कार के लिए अपने को तैयार कर सकते हैं।

6.9 शब्दावली

साक्षात्कारकर्त्ता : साक्षात्कार लेने वाला (Interviewer) व्यक्ति।

साक्षात्कारी : साक्षात्कार देने वाला व्यक्ति (Interviewee) अर्थात् जिससे साक्षात्कार लिया जाता है।

साधारणीकरण : काव्य या कला का आस्वादन करते हुए पाठक या प्रेक्षक का ऐसी स्थिति में पहुँचना जहाँ वह पूर्णतः रचना के साथ तादात्म्य स्थापित कर लेता है।

6.10 बोध प्रश्नों/अभ्यासों के उत्तर

बोध प्रश्न

1) क) × ख) √ ग) × घ) √

2) सूचनात्मक साक्षात्कार में व्यक्ति-विशेष से किसी विषय के संबध में जानकारी प्राप्त की जाती है जबकि व्याख्यात्मक साक्षात्कार में ज्ञात तथ्यों के संबंध में व्यक्ति-विशेष का पक्ष या स्पष्टीकरण जाना जाता है।

3) क) व्यक्ति-विशेष के व्यक्तित्व को उजागर करना।
   ख) उसकी अभिरुचियां, प्रवृत्तियों और मानसिक बुनावट से साक्षात्कार कराना।

4) क) पाठक किन समस्याओं से उद्वेलित हैं?
   ख) उनके संबंध में वे क्या जानना चाहते हैं?
   ग) इनके बारे में अधिकारिक और अधिकतम सूचना कौन दे सकता है?

5) किसी ज्ञात तथ्य के संबंध में व्यक्ति-विशेष के पक्ष को प्रस्तुत करना और उससे स्पष्टीकरण प्राप्त करना इसका उद्देश्य है। इसके लिए समस्या के संबंध में भेंटकर्त्ता की पर्याप्त तैयारी होनी चाहिए। उसे प्रतिप्रश्न पूछने के लिए तैयार रहना चाहिए।

6) जिस क्षेत्र-विशेष के लिए आप इंटरव्यू लेना चाहते हैं उसके लिए अधिकारी व्यक्ति कौन है? क्या वह सरलता से इंटरव्यू देने के लिए तैयार हो जाएगा? क्या उस व्यक्ति से इंटरव्यू लेना प्रासंगिक है?

7) इंटरव्यू लेने से पूर्व आप जिस विषय पर इंटरव्यू लेना चाहते हैं, उसके संबंध में आवश्यक जानकारी अवश्य प्राप्त करें। साक्षात्कारी से पूर्वानुमति लें और उसके संबंध में भी आवश्यक जानकारी हासिल कर लें। साक्षात्कारी से समय निर्धारित करें। प्रश्न बना लें और यह भी विचार कर लें कि प्रश्नों को किस क्रम से पूछेंगे।

8) क) उच्च पुलिस अधिकारी या शहर प्रशासक से।
   ख) गृहिणी, छोटा दुकानदार, नौकरीपेशा व्यक्ति, वित्तमंत्री से।
   ग) छात्रों, अभिभावकों, अध्यापकों, नेताओं से।
   घ) प्रेमचंद के पाठकों, रचनाकारों, समीक्षकों एवं प्रेमचंद पर शोध कार्य करने वालों से।

9) क) गलत जानकारी या अनभिज्ञता से हम गलत प्रश्न पूछेंगे जिसका साक्षात्कारी पर प्रतिकूल असर पड़ेगा।
   ख) आवश्यक अध्ययन के बिना हमारे प्रश्न सामान्य स्तर के होंगे और प्रतिप्रश्न भी नहीं पूछ पायेंगे।

10) क) प्रश्नों की भाषा साक्षात्कारी के प्रति पूर्वग्रहयुक्त नहीं होनी चाहिए।
ख) चुभने वाली और तीखी भाषा के इस्तेमाल से बचना चाहिए।
ग) प्रश्न पूछते हुए अपनी ओर से उत्तर नहीं सुझाना चाहिए।

11) क) गलत ख) सही ग) गलत घ) सही ड.) सही

12) अच्छा साक्षात्कार लेने के लिए जरूरी है कि आप साक्षात्कारी से तादात्म्य स्थापित करें। इसके लिए सबसे पहले साक्षात्कारी के महत्व और व्यस्तता की चर्चा करें और समय देने के लिए उसके प्रति आभार प्रकट करें। उससे साक्षात्कार के उद्देश्य की चर्चा करें। जो प्रश्न आप पूछना चाहते हैं उनके बारे में बताएँ और उससे सुझाव लें और यथासंभव प्रश्नों में परिवर्तन कर लें। आपका व्यवहार लचीला और विनम्र होना चाहिए।

13) नये साक्षात्कारी के साथ आपका व्यवहार सहानुभूतिपूर्ण एवं मित्रवत् होना चाहिए। ऐसे व्यक्ति के साथ साक्षात्कार से पूर्व मुद्दों पर अनौपचारिक बातचीत कर लीजिए। इसी प्रक्रिया में आप धीरे-धीरे अपने प्रश्नों पर आइए।

14) पहले साक्षात्कारी का विश्वास प्राप्त कीजिए। विनम्रता से प्रश्न पूछें। अगर उत्तर से आप संतुष्ट न हों तो आप बिना घबराए और उत्तेजित हुए भिन्न ढंग से उसी प्रश्न को पूछें। अगर आप पूरी तैयारी के साथ गये हैं तो आप अपने सवाल को कई तरीके से पूछ सकते हैं। धैर्य, विनम्रता और समझदारी के साथ आप अपने प्रश्न का उत्तर पा सकते हैं।

15) देखिए 6.7.2

अभ्यास

1) क) सूचनात्मक साक्षात्कार
ख) व्याख्यात्मक साक्षात्कार
ग) यह प्रश्न दोनों तरह के साक्षात्कार में शामिल किया जा सकता है।
घ) व्यक्ति-आधारित साक्षात्कार
ङ) व्याख्यात्मक साक्षात्कार

2) इस साक्षात्कार में आप निम्नलिखित विषयों पर प्रश्न पूछ सकते हैं :
i) प्रदूषण के कारण : संभावित उत्तर : दोषपूर्ण सफाई व्यवस्था, कारखानों से निकलने वाले धुएँ और बढ़ते वाहन आदि।
ii) प्रदूषण से बचने के उपाय:
क) सफाई व्यवस्था कैसे सुधारी जाए।
ख) कारखाने से निकलने वाले धुएँ और अपशिष्ट से फैलने वाले प्रदूषण से कैसे बचा जाए।
ग) वाहनों से निकलने वाले धुएँ को कम करने के क्या उपाय हैं।

3) i) ख ii) क iii) ख iv) ख

4) प्रश्न बनाते समय यह ध्यान रखिए कि एक प्रश्न से दूसरा प्रश्न परस्पर संबद्ध हो एवं सामान्यतः पहले प्रश्न के उत्तर से ही दूसरा प्रश्न बनना चाहिए।

5) सबसे पहले आप वह क्षेत्र निर्धारित कीजिए जिससे संबंधित प्रश्न आप पूछेंगे। मान लीजिए विषय है: शहर में बढ़ता साम्प्रदायिक तनाव। आप निम्नलिखित प्रश्न तैयार कर सकते हैं?

i) हमारे शहर में सांप्रदायिक सद्भाव की लंबी परंपरा रही है, लेकिन पिछले कुछ समय से इस माहौल को बिगाड़ने की कोशिश की जा रही है, आप इसे किस रूप में लेते हैं?

ii) जो ताकतें सांप्रदायिक तनाव बढ़ा रही हैं, उनके एकाएक पनपने का क्या कारण है?

iii) क्या इसके लिए राजनीतिक पार्टियां और राजनेता भी दोषी नहीं हैं।

iv) आप इस समस्या से निपटने के लिए क्या उपाय सुझाते हैं?

v) जनता को सांप्रदायिकता के विरुद्ध कैसे एक्यबद्ध करना चाहिए? क्या आप कुछ ठोस सुझाव देंगे?

दिए गए उत्तर के अनुसार प्रश्नों में आप आवश्यक परिवर्तन कर सकते हैं।

6) **प्रश्न :** ''तमस'' लिखने की प्रेरणा आपको कहाँ से मिली? ऐसी कौन-सी बात थी, जिसने आपको इस विषय पर कलम उठाने के लिए मजबूर कर दिया?
(आपके 'प्रश्न' में उपर्युक्त बातें हो सकती हैं, भाषा का रूप भले ही भिन्न हो)